सिद्धार्थ गौतम बुद्ध

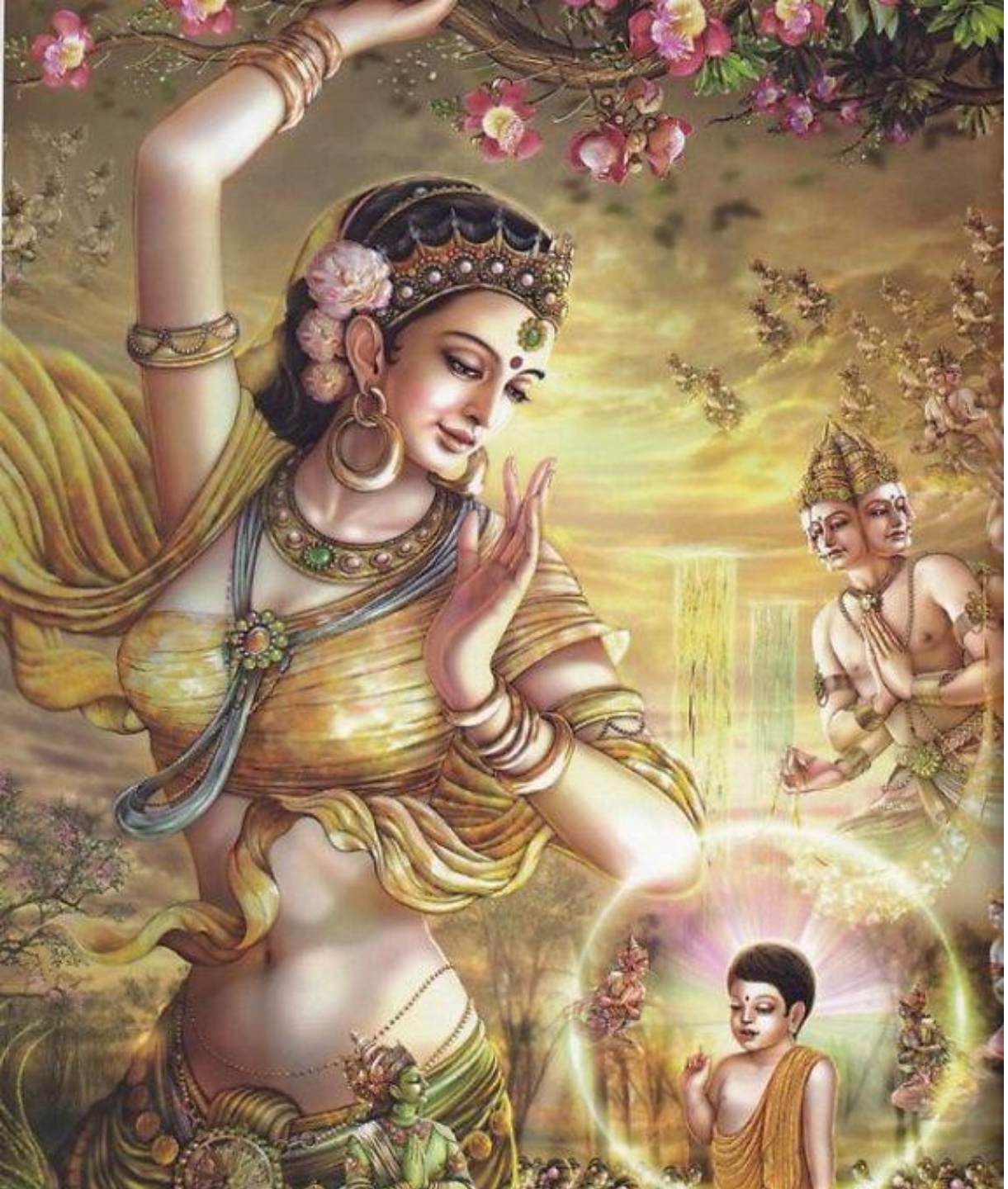

जन्म

सिद्धार्थाचे जन्मस्थळ- **लुंबिनी**

कपिलवस्तू राजधानी

पिता राजा शुद्धोदन शाक्य राजा.

राणी महामाया ही सिद्धार्थाची आई.

लुंबिनीमध्ये बुद्धांचा जन्म दर्शविणारे देवळातील भित्तीचित्र

Delhi
NEPAL
Lumbini
INDIA
Calcutta
Bombay
Madras

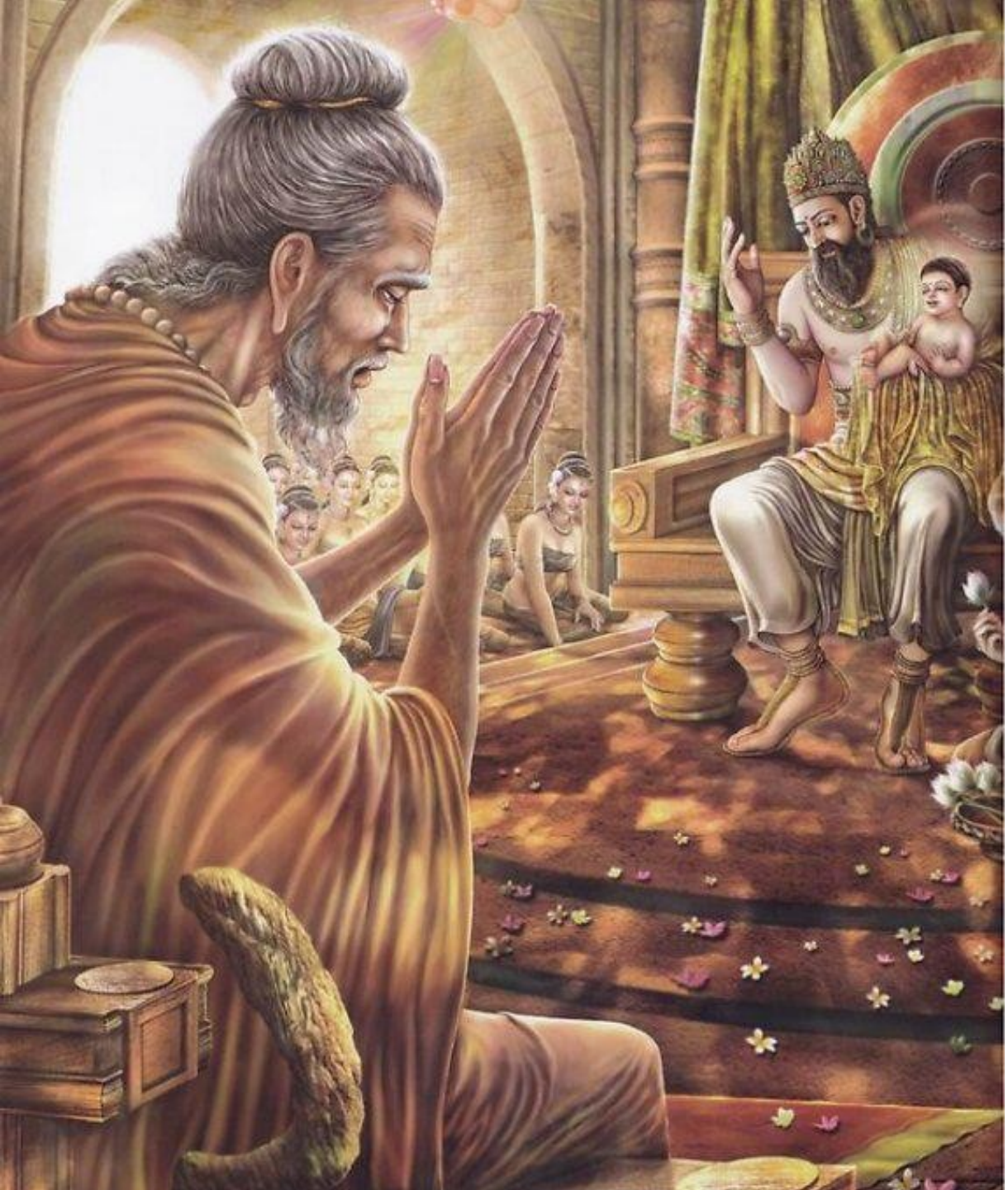

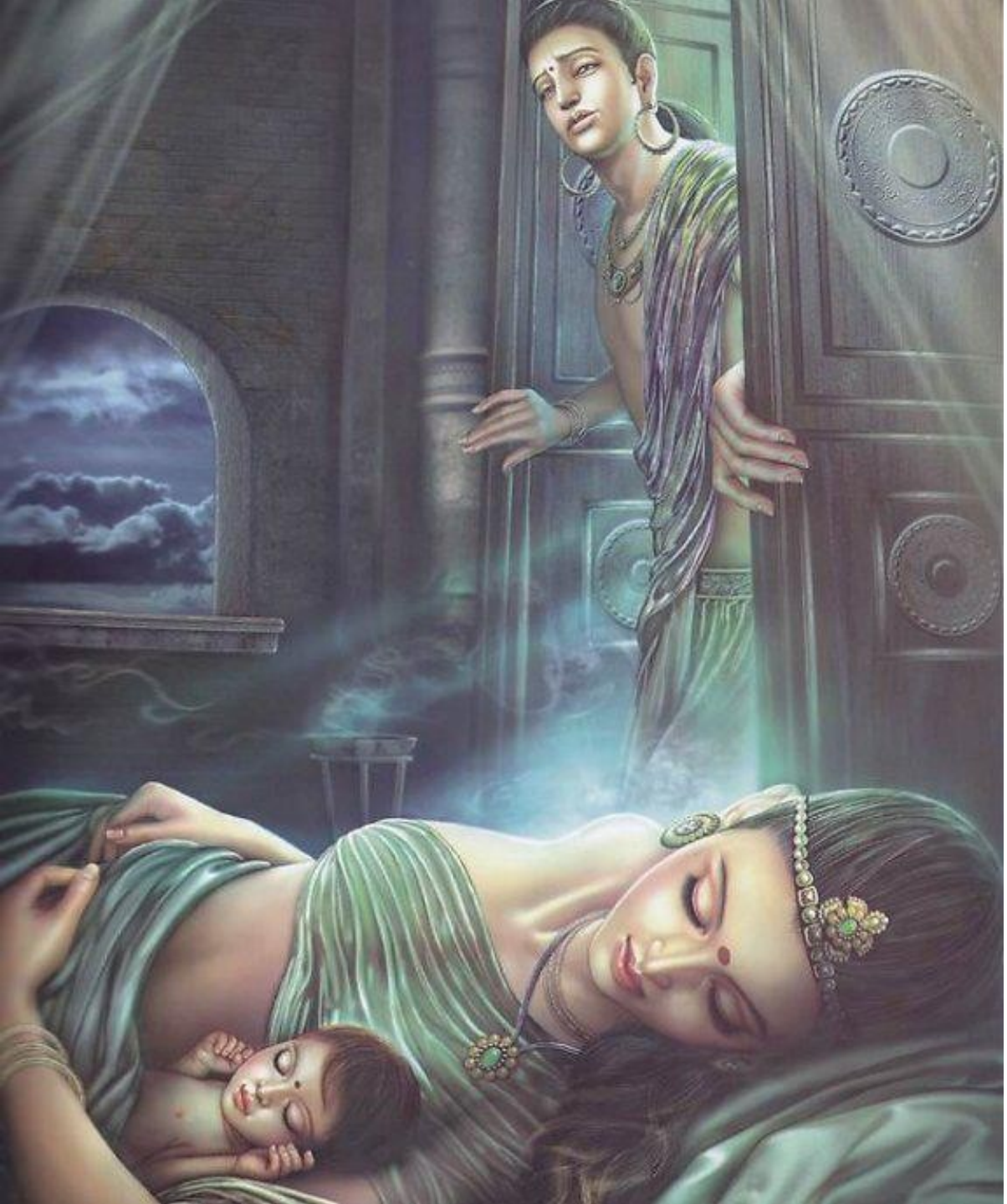

महाभिनिष्क्रमण

२९व्या वर्षी एका पावसाळी रात्री सिद्धार्थ राजवाड्याबाहेर निघाला.

?

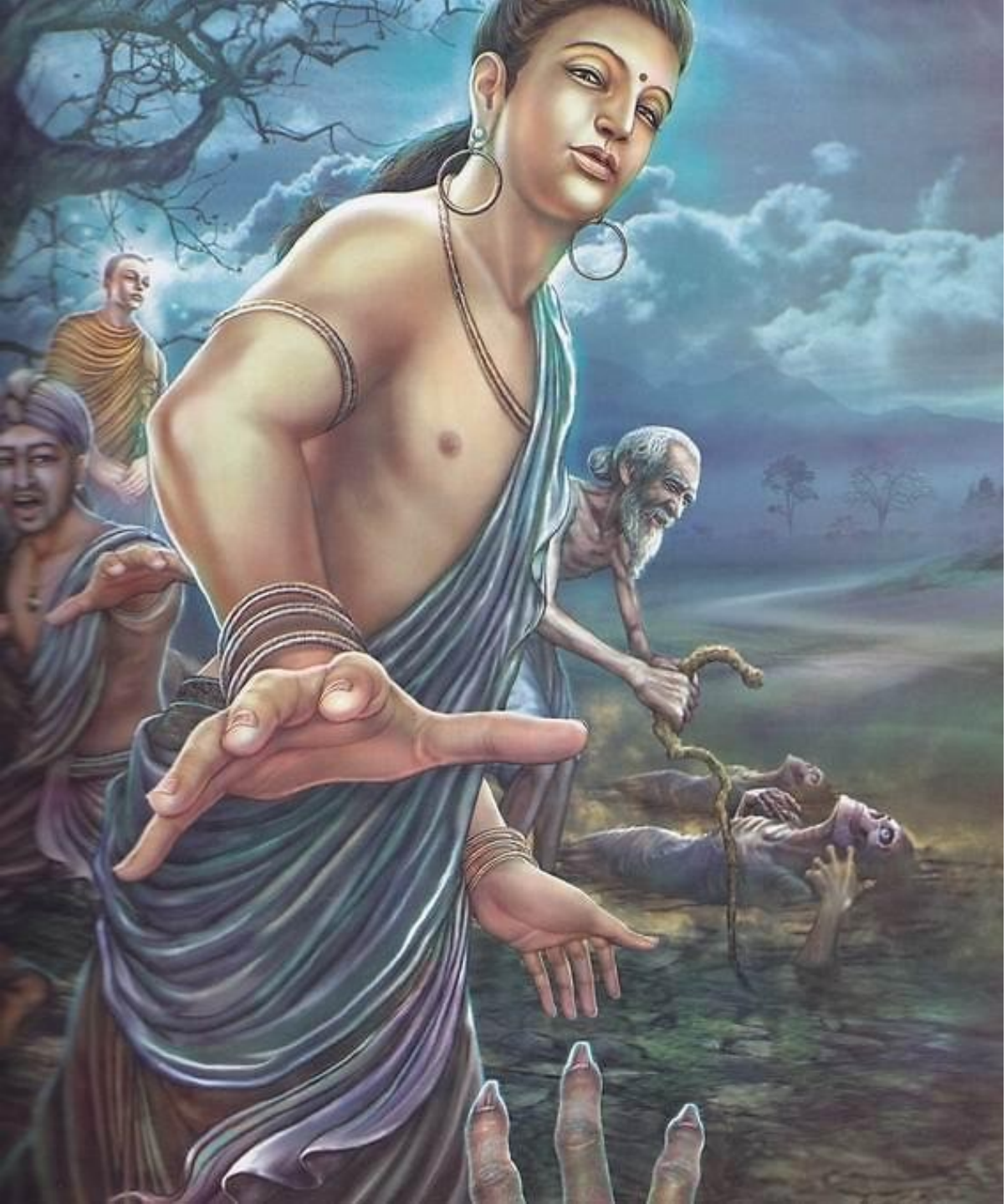

- प्रथमच, जीर्ण शरीराचा रुग्ण पाहिला,
- जराजर्जर वृद्धत्व पाहिले.
- एक प्रेतयात्रा त्यास दिसली.
- आणि एक संन्यासी त्याने पाहिला.

Shyakya X Koliya

रोहिणी नदी

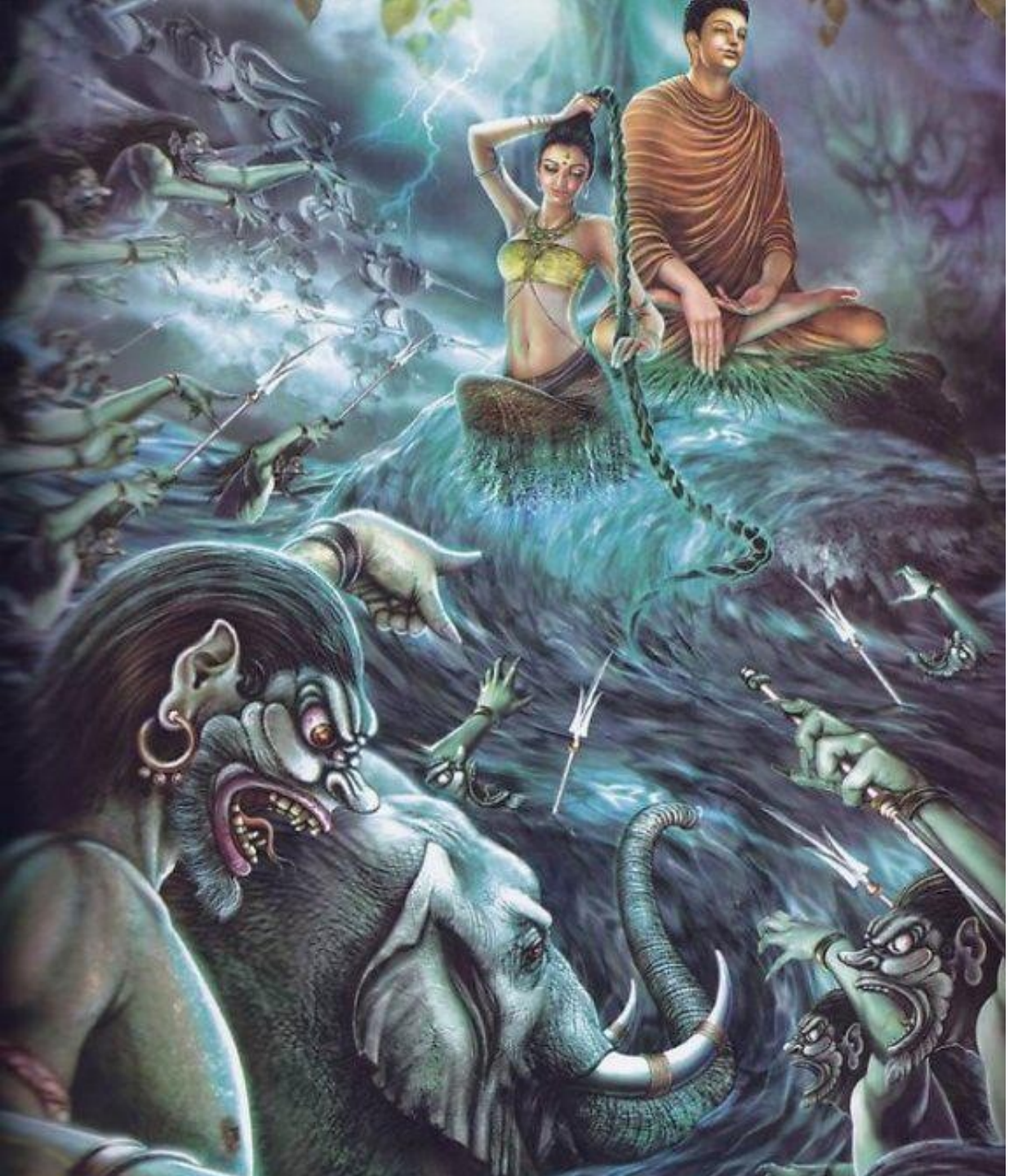

तपस्या

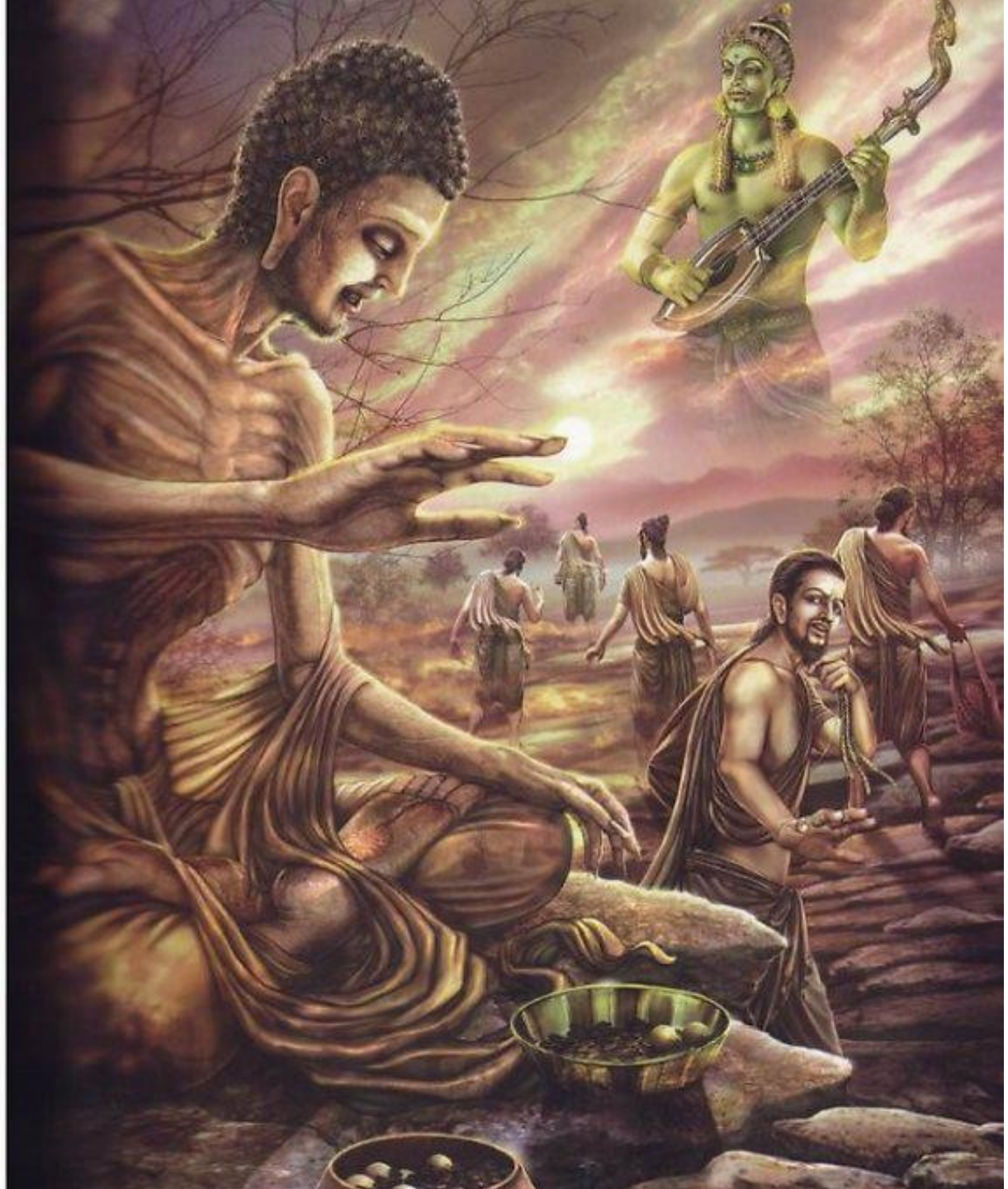

ज्ञान प्राप्ति

वयाच्या ३५ व्या वर्षी बोधीवृक्षाच्या छायेत अखेर बुद्धास ज्ञानप्राप्ती झाली. (वैशाख पूर्णिमा)

वयाच्या ३५ व्या वर्षी बोधीवृक्षाच्या छायेत अखेर बुद्धास ज्ञानप्राप्ती झाली. (वैशाख पूर्णिमा)

धर्म-चक्र-प्रवर्तन

चार सप्ताह तक बोधिवृक्ष के नीचे रहकर धर्म के स्वरूप का चिंतन करने के बाद बुद्ध धर्म का उपदेश करने निकल पड़े।

आषाढ़ की पूर्णिमा को वे काशी के पास मृगदाव (वर्तमान में सारनाथ) पहुँचे।

वहीं पर उन्होंने सबसे पहला धर्मोपदेश दिया और पहले के पाँच मित्रों को अपना अनुयायी बनाया और फिर उन्हें धर्म प्रचार करने के लिये भेज दिया।

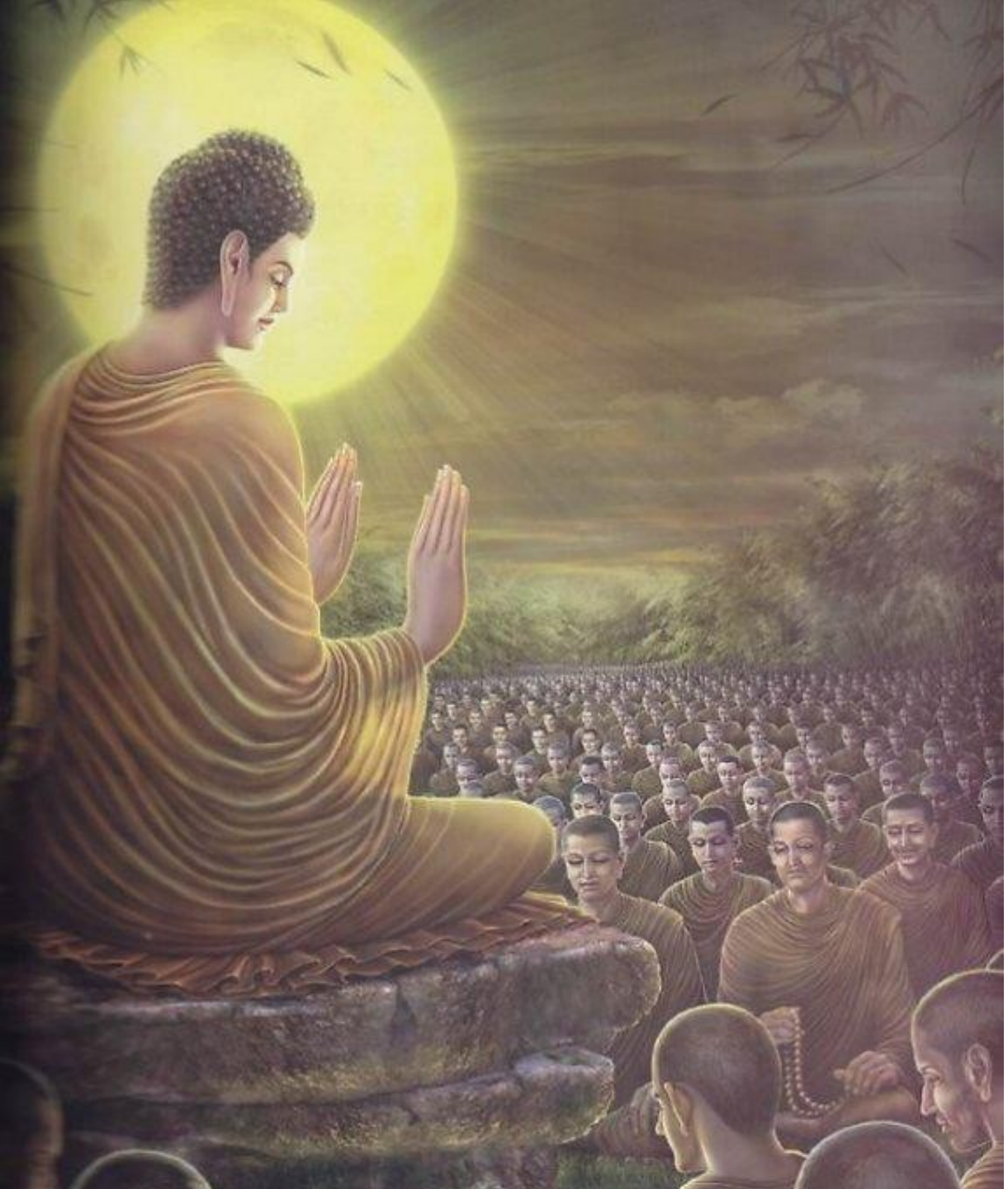

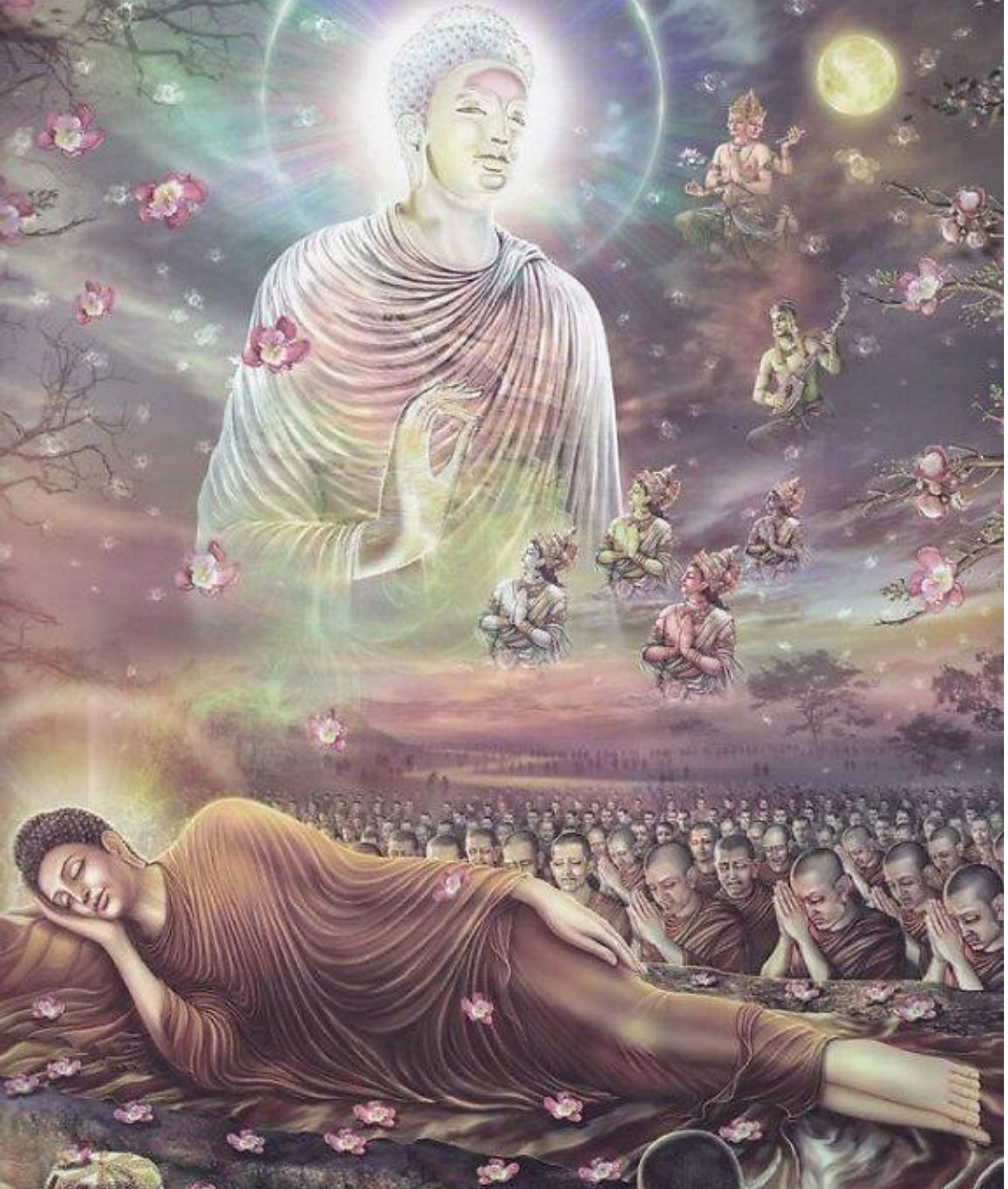

महापरिनिर्वाण

- ८० वर्ष की आयु में बुद्ध ने घोषणा की कि वे जल्द ही परिनिर्वाण के लिए रवाना होंगे।
- बुद्ध ने अपना आखिरी भोजन, जिसे उन्होंने कुन्डा नामक एक लोहार से एक भेंट के रूप में प्राप्त किया था, ग्रहण लिया जिसके कारण वे गंभीर रूप से बीमार पड़ गये।
- बुद्ध ने अपने शिष्य आनंद को निर्देश दिया कि वह कुन्डा को समझाए कि उसने कोई गलती नहीं की है। उन्होने कहा कि यह भोजन अतुल्य है।

महापरिनिर्वाण

A statue of the Buddha
from Sarnath, 4th century CE

Gandhāran depiction of the Buddhafrom Hadda,Afghanistan
Victoria and Albert Museum, London